

गायत्री-तत्त्व-निरूपण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

सम्पादक तथा प्रकाशक

प्रो. (डॉ.) विश्वमूर्ति शास्त्री

॥ दो शब्द ॥

आप सभी भली प्रकार से यह जानते हैं कि-प्रत्येक देश की संस्कृति, धर्म, राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक होता है जिससे जनता आत्मविश्वासी एवं धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होकर अपने-अपने धर्म के अनुसार घृणा, द्वेष और ईर्ष्यादि को छोड़कर, परस्पर सहभाव और मैत्री संवर्धन करते हुए देश को उन्नत बनाने में अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करते हुए पथ प्रदर्शक बनकर जनता के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करती है।

सनातन धर्म सब से पुराना धर्म है, इस धर्म में विविध विध-ज्ञान विद्यमान हैं, विविध पूजाएँ मन्त्रों के जप तथा पाठ और यज्ञों के विधान निर्दिष्ट किए गए हैं।

सनातन धर्म की श्रीवृद्धि के लिए, ब्राह्मण के लिए सन्ध्योपासना, "द्विज वर्ग" ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिए गायत्री जप अत्यावश्यक बताया गया है। द्विज वर्ग प्रायः गायत्री जप को, सन्ध्या को, पुरश्चरण के माध्यम से गायत्री उपासना को भूल रहे हैं, भारतीय संस्कृति का मूल "वैदिक संस्कृति" है-वेदों से प्राप्त, राष्ट्र, समाज तथा जनकल्याण हेतु वेदों का सारभूत गायत्री मन्त्र है, इस गायत्री मंत्र के द्वारा की गई उपासना से, ऋषि मुनि, अनिष्ट को दूर भगाने में और अभीष्ट को प्राप्त करने में, राष्ट्र के नाना संकट दूर करने में सक्षम थे। आज गायत्री उपासना की ओर ध्यान न देकर मानव नाना प्रकार के पचड़ों में पड़ा हुआ है, जिससे देश में अशान्ति का वातावरण, एक दूसरे को सहन करने की अक्षमता, परस्पर द्वेष, ईर्ष्या, कलह और क्लेश का वातावरण बना हुआ है। अनुशासन हीनता, अनैतिकता, हमारे समाज को कहां तक ले जाएगी यह आप स्वयं विचार करें।

पहले गायत्री मंत्र के जप से समाज के सभी वर्गों में सद्भावना, मैत्री और नैतिकता का बोलबाला था। आज यदि प्रकृति में भी विपरीत परिस्थितियां पनप रही हैं तो इसका दायित्व भी हम सब पर है। आज जनता को, जो रास्ते पर लगाने वाले हैं, वे भी मञ्चों पर सभाओं में अभद्र व्यवहार करते देखे जा रहे हैं। प्रत्येक वर्ग यदि अपने-अपने धर्म पर आस्था रखता और धर्म के अनुसार आचरण करता तो आज समाज का यह विकृत रूप और बिखराव नहीं देखना पड़ता।

आप सभी अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करें तथा उस सूर्य स्वरूप महातेज की आराधना करें तथा गायत्री के पांच मुख स्वरूप पञ्चतत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, आकाश, वायु) को प्रदूषण से बचाकर जन-जन के कल्याण के प्रति अपना योगदान दें।

समस्त कार्यों को सिद्ध करने वाले
योगीराज बावा बल्लो महाराज की जय

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बावा बल्लो संस्थान के संचालक
वरिष्ठ पं. श्री यशपाल शर्मा
मथवार, तहसील-अखनूर, जम्मू



卐 गायत्री-तत्व-निरूपण 卐

चारों वेदों के सारभूत गायत्री मन्त्र को प्रायः सभी जानते हैं-**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

अर्थ-पृथ्वी, अन्तरिक्ष और स्वर्गपर्यन्त जो सविता (प्रकाश स्वरूप सूर्य) सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में प्रसिद्ध है, वह प्रकाशमान विश्व-स्रष्टा परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्कार्य में प्रेरित करे।

यह मन्त्र ही ब्रह्म और जीवात्मा की एकता का बोधक है। सम्पूर्ण वेद, स्मृति और इतिहास पुराणादियों का यही लक्ष्य है कि सांसारिक दुःख की निवृत्ति तथा शाश्वत आनन्द की प्राप्ति हो, यह लक्ष्य गायत्री उपासना से, सन्ध्योपासना से, गायत्री पुरश्चरण और गायत्री मंत्र के जप से ही प्राप्त हो सकता है। गायत्री जप से मल, विक्षेप और आवरण का नाश हो जाता है।

"**यज्ञानां जप यज्ञोऽस्मि**" अर्थात् जितने यज्ञ हैं उसमें जप यज्ञ का महत्व सर्वोपरि है भगवान् कृष्ण के इस गीता वचनाऽनुसार सम्पूर्ण यज्ञों में हिंसा तथा द्रव्य व्यय होने के कारण जप यज्ञ का महत्व सर्वाधिक है। बिना अर्थ ज्ञान के ॐकार का जप करना, बिना अर्थ ज्ञान के अन्य मन्त्रों का जप तथा वेद और धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना भूसी अथवा आटे से निकले हुए तुष समूह को कूटने के समान है।

गायत्री नाम छन्द का है-

"**गायत्री छन्दसा महम्**" अर्थात् छान्दों में मैं गायत्री हूँ। "**गायत्री छन्दसां मातेति**"-गायत्री वेदों का आदि कारण है।

"**गायत्र्यास्तु परं जप्यं न भूतो न भविष्यति**"। इससे यह प्रतीत होता है कि गायत्री के समान कोई जप नहीं है

गायत्री चैव वेदाश्च ब्रह्मणा तोलिता पुरा।
वेदेभ्यश्च सहस्रेभ्यो गायत्र्यति गरीयसी॥

इस बृहत्पाराशरोक्त वचनानुसार-पूर्वकाल में ब्रह्मा ने गायत्री और वेदों को तोला तो सभी वेदों से गायत्री का पलड़ा भारी रहा।

गायत्री महत्व के विषय में अधिक जानकारी के लिए देवी भागवत, मनुस्मृति, अत्रिस्मृति, व सन्ध्याभाष्य में गायत्री तत्व में, गायत्री रहस्य में, गायत्री महाविज्ञान में सूर्योपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, कूर्मपुराण, ऋष्यश्रृंग आदि में देखा जा सकता है।

गायत्री के ध्यान के विषय में व्यास ने कहा है-

गायत्री नाम पूर्वाह्ने सावित्री मध्यमे दिने।
सरस्वती च सायाह्ने सैव सन्ध्या त्रिषु स्मृता॥

प्रातः, मध्याह्न और सायंसन्ध्या में क्रम से गायत्री, सावित्री और सरस्वती का ध्यान करें।

अनादि परमात्म तत्व ब्रह्म से सब कुछ पैदा हुआ सृष्टि पैदा करने का विचार पैदा होते ही ब्रह्मा में एक स्फुरणा उत्पन्न हुई जिसका नाम है शक्ति। शक्ति के द्वारा दो प्रकार की सृष्टि पैदा हुई एक "जड़" दूसरी "चैतन्य" जड़ सृष्टि का संचालन करने वाली शक्ति "प्रकृति" और चैतन्य सृष्टि का संचालन करने वाली शक्ति "सावित्री" है।

अज्ञान, अशक्ति और अभाव यह तीनों सम्पूर्ण दुःखों के कारण हैं इनको जो गायत्री उपासना से दूर करेगा वही सुखी होगा।

गायत्री तीनों देवों का स्वरूप होने के कारण त्रिदेवमयी है। वेदत्रयी तत्वस्वरूपिणी गायत्री-इसी से सच्चिदानन्द स्वरूप वाला ब्रह्म ज्ञात होता है।

गायत्री मंत्र में सर्वप्रथम ॐकार है जो तीनो व्याहृतियों का सार है। ॐकार परब्रह्म है सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ है, सर्वप्रथम तप से सिद्ध हुए ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुआ है। ॐकार अ-उ-म तथा अर्ध मात्रा ँ इन चारों के संयोग से बना है, यही चारों अक्षर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं, सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण और निर्गुण। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और निराकार। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीया। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास तथा धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष यह चारों भी इसी ओंकार में निहित हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी इसी में निहित है इसीलिए कहा है कि- **"अवति संसार सागरादिति ॐम्"** संसार सागर से जो रक्षा करता है वह ॐ है।

मंत्र में आई हुईं व्याहृतियों का अर्थ-

1. **भूः - भवतीति भूः सर्वेषां उत्पत्ति स्थानं, लिंगस्थानं, पातालादि सप्त भुवन सहितो भूर्लोकः।** जो सबका उत्पत्ति स्थान है, जिसमें चराचर प्राणि उत्पन्न होते है इसलिए "भूः" प्रथम व्याहृति कही गई है।
2. **भुवः** - **"भवयति स्थापयति विश्वमिति भुवः"** संसार की जो स्थापना करे उसे भुवः नाम से कहा गया है।
3. **स्वः** - **"सु अवति, प्राप्नुवते, हति स्वः"** अर्थात् देह देवता जिससे प्रकट हो उसे **"स्वः"** कहा जाता है जो स्वर्ग लोक है। अवति का अर्थ परिपूर्ण होता है, अच्छी तरह परिपूर्ण होने से **"स्वः"** नाम व्याहृतियों में चरितार्थ होता है।

"गायत्री मन्त्रार्थ"

1. **तत्** - मन्त्र में यह अव्यय पद परोक्ष अर्थ के लिए आया है अर्थात् जो दिखाई न दे तत् शब्द आगे मन्त्र में आने वाले भर्ग का विशेषण है। तत् अर्थात् आत्मरूप स्वतः सिद्ध परब्रह्म कहा जाता है। **"ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः-कृतः"** अर्थात् ॐ-तत्-सत् यह ब्रह्म के तीन नाम हैं।
2. **सवितुः** - **"षुञ्" "षु" "षू"** धातुएं क्रम से उत्पत्ति ऐश्वर्य और प्रेरणा करने

के अर्थ में हैं। इन्हीं से चराचर प्राणियों को उत्पन्न करने वाला सविता रूप बनता है जो ऐश्वर्य का स्थान है, जो सभी को अपने-अपने कार्य कलाप करने के लिए प्रेरित करता है-यही सविता देव सूर्य मण्डल के अन्तर्गत ईश्वर है।

3. **वरेण्यम्** - जो वर्णन करने के योग्य सर्वश्रेष्ठ है वही वरेण्य शब्द से कहा जाता है।

वरेण्यं वरणीयञ्च संसार भय भीरूभिः।
आदित्यान्तर्गतं यच्च भर्गाख्यं वा मुमुक्षुभिः॥

संसार के भय से डरे हुए पुरुषों से अथवा मुक्ति की इच्छा रखने वाले पुरुषों के द्वारा आदित्य के अन्तर्गत जो भर्ग नाम का तेज है, वह प्रार्थनीय है।

4. **भर्गः** - **"गायत्र्येव भर्गः तेजो वै गायत्री"** यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि गायत्री ही भर्ग है तथा तेज ही गायत्री है। उपासना करने वालों के पापों का भञ्जन करने के कारण भर्ग नाम है अज्ञान के दोषों का नाश करने वाला एक मात्र जो ज्ञान स्वरूप है, वह भर्ग है।

5. **देवस्य** - जो प्रकाश स्वरूप है जो चराचर संसार को प्रकाशित करता है वह देव है। सभी प्राणियों में जो आत्मा रूप से प्रकाश करता है, स्तुतियों के द्वारा जो पूजा जाता है, इसलिए इस सर्वव्यापि को "देव" कहा गया है।

6. **धीमहि** - इसका अर्थ ध्यान करना है अर्थात् आत्म रूप करके आत्मा का हम लोग, उस परब्रह्म स्वरूप का ध्यान करते हैं। किसी वस्तु में अनुराग से युक्त होने का नाम ध्यान है। ध्यान से मोक्ष और मोक्ष से सुख की प्राप्ति होती है। जो ध्यान करता है उसका ध्यान करने योग्य परमात्मा से अभेद होना ध्यान कहलाता है।

7. **धियः** - बुद्धियों को धियः शब्द से कहा गया है। धारण करने वाली बुद्धि को "धी" कहते हैं अर्थात् जो धर्मादि विषयों को धारण करे उस बुद्धि को धी कहते हैं।

8. **यः** - जो सत्य ज्ञानादि रूप ब्रह्म है, जो जीवात्मा रूप है, जो सविता देव है।

9. **नः** - इसका अर्थ हमारा है, अर्थात् हमारी बुद्धियों को।

10. **प्रचोदयात्** - 1. इसका अर्थ प्रेरणा करना है, अचेतनों के चैतन्य को चैतन्य करने वाला भगवान् प्रेरित करे।

    2. जो सविता देव का तेज हम सबके द्वारा प्रार्थनीय है, जप करने वालों के पापों का जो नाश करता है, उस तेज की हम उपासना करते हैं, वह तेज हमारी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने में प्रेरित करे।

1. गायत्री और ॐकार के संयोग से संसार प्रवर्तित होता है-

गायत्री प्रकृतिर्ज्ञेया ॐकार पुरुषः स्मृतः।
ताभ्यामुभय संयोगाद् जगत्सर्वं प्रवर्तते॥

अर्थात्-गायत्री प्रकृति है और ॐकार पुरुष है इन दोनों के संयोग से संसार प्रवर्तित होता है।

2. गायत्री उपासना के लिए यज्ञोपवीत तथा गुरुदीक्षा प्राप्त करना आवश्यक-

गायत्री उपासना से पूर्व यज्ञोपवीत धारण कर विद्वान् गुरु से दीक्षा प्राप्त कर लें, द्विज-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्रातःकालीन स्नानादि से निवृत्त होकर प्रथम कर्तव्य गायत्री मन्त्र का जप करना है-परन्तु ब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री की उपासना सन्ध्यावन्दन के द्वारा ब्राह्मण के लिए अत्यन्त आवश्यक कही गई है जो ब्राह्मण ऐसा नहीं करता वह पाप का भागी बनकर नरक गामी होता है।

3. गायत्री उपासना की आवश्यकता

प्राचीन समय से सन्ध्या के साथ-साथ गायत्री की उपासना चली आ रही है, जिससे यह गायत्री जप हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, द्विज मात्र को यथाशक्ति गायत्री मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए विशेषकर ब्राह्मण को, प्रायः बहुत से ब्राह्मण भी सन्ध्या तथा गायत्री का जप नहीं करते जिससे समाज में बहुत सी स्त्री अपमानादि बुराईयां, अकाल मृत्यु, जन-जन की परस्पर दुर्भावना, नशा, चोरी दुराचरण पाखण्ड का बोल बाला विविध प्रकार के दोष उत्पन्न हो रहे हैं। इन सबका निदान एक मात्र गायत्री उपासना है, जिस उपासना में किए गए जप से, वह (सविता देव) गायत्रीमाता प्रसन्न होकर आशीर्वाद के द्वारा जन-जन का कल्याण करेगी।

4. गायत्री उपासना के लिए शुद्धता अनिवार्य

जप के लिए श्वेत वस्त्र, शुद्धता, आसन शुद्धता, पात्र शुद्धता, पूजा सामग्री की शुद्धता, भाव तथा मन की शुद्धता मन्त्रोच्चारण की शुद्धता, गायत्री मंत्र के अर्थज्ञान की शुद्धता, माला की शुद्धता होना आवश्यक है। जितनी शुद्धता के साथ गायत्री माता की उपासना होगी उतनी ही शीघ्रता से प्रसन्न होकर वरदान देगी।

ब्रह्मादि देव भी गायत्री की उपासना करते हैं-

ब्रह्मादयोऽपि संध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च।
वेदा-जपन्ति तां नित्यं वेदोपास्या ततः स्मृता॥ दे.भा. 11-16-16

अर्थात्-जब ब्रह्मादि देव और वेद भी गायत्री के जप करने में संलग्न हैं, तब मनुष्यों के लिए इसका जप करना कितना आवश्यक है यह आप स्वयं समझ सकते हैं।

ऋग्वेद के समय में ऋषिकाओं की सूची वृहद् देवता के दूसरे अध्याय में बताई है-जिसमें, घोषा, गोधा, विश्ववारा, इन्द्राणी, लोपामुद्रा, श्रद्धा, मेधा सावित्री आदि स्त्रियों के नाम आते हैं, इससे यह प्रतीत होता हे कि स्त्रियां भी पुरुषों की तरह वेद पढती थीं और यज्ञ करवाती थीं।

शतपथ ब्राह्मण, महाभारत, तैत्तरीय ब्रह्मणादि ग्रन्थों में स्त्रियों के द्वारा यज्ञ करवाने तथा ब्रह्मा, आचार्यादि बनने के विभिन्न प्रमाण हैं।

संक्षिप्त में यह कहना है कि गायत्री उपासना (जप) की जो विधि बताई है, उस विधि से (प्रक्रिया) से परिपूत होकर स्त्रियां वेदाध्ययन, गायत्री जप कर सकती हैं। जिनके लिए कुछ समय विशेष को छोड़कर शुद्धता की स्थिति में ही वैदिक क्रिया-कलाप करने का विधान है। गा.म.वि. पृ.40-51

नारी वास्तविक रूप से साक्षात् महामाया है। जैसे–

जननी जन्मकाले च स्नेह काले च कन्य का।
भार्या भोगाय सम्पृक्ता अन्त काले च कालिका।।

अर्थात्–"स्त्री" जन्म के समय माता, स्नेह के समय कन्या, भोग के समय भार्या, (युद्ध के समय "चण्डि") अन्त काल में अमर्यादितों के लिए काली है।

भगवती गायत्री के प्रभाव से महर्षि वसिष्ठ ने विश्वामित्र के सम्पूर्ण शस्त्रास्त्रों को नष्ट कर विजय प्राप्त की थी। गायत्री के प्रभाव से ही राजर्षि विश्वामित्र ने ब्रह्मर्षि पद को प्राप्तकर, नवीन सृष्टि रचने की अद्‌भुत शक्ति प्राप्त कर ली थी।

गायत्री मन्त्र के तीन पाद हैं, जैसे–

प्रथम–तत्सवितुर्वरेण्यं। द्वितीयपाद–भर्गो देवस्य धीमहि। तीसरा पाद धियो यो नः प्रचोदयात्।

चौबीस अक्षरों में जो सातवां अक्षर है, वह ण्य है। इस णिकार (ण) यकार (य) इनको दो वर्ण गिनों। जप के समय 'ण्य' का ही प्रयोग करें।

गायत्री शापविमोचन के लिए केवल ब्रह्म, वसिष्ठ और विश्वामित्र के शाप से मुक्त हो जाओ-ऐसा तीनों के शाप से मुक्त होने के लिए तीन बार कहें।

प्राणायाम-गायत्री

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।(तै.आ.प्र.10 अ. 27)

हम स्थावर-जङ्गम रूप सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाले उन निरतिशय परमेश्वर के भजने योग्य तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं जो-भूर्लोक, भुवलोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक नाम वाले समस्त लोकों में व्याप्त हैं तथा जो सच्चिदानन्द स्वरूप जल रूप से संसार का पालन करने वाले, अनन्त तेज के धाम, रसमय, अमृतमय और भूर्भुवः स्वः स्वरूप त्रिभुवनात्मक ब्रह्म हैं।

गायत्री जप से पूर्व षडङ्ग न्यास कर लें–

करन्यास–

ॐ भूः अंगुष्टाभ्यां नमः – तर्जनी से अंगुष्ट का स्पर्श करें।

ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः – अंगूठे से तर्जनी का स्पर्श करें।

ॐ स्वः मध्यमा भ्यांनमः – अंगूठे से मध्यमा का स्पर्श करें।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् – अनामिकाभ्यां नमः – अनामिका का स्पर्श करें।

ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः – अंगूठे से कनिष्ठिका का स्पर्श करें।

ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् - दोनों हथेलियों का बाहर भीतर स्पर्श करें।



त्रिकाल सन्ध्या ध्यान

प्रातःध्यान- गायत्री का

कुमारी, ऋग्वेदस्वरूपिणी, ब्रह्मरूपा, हंसवाहिनी, द्विभुजा, रक्तवर्णा, अक्षसूत्र-कमण्डलुधरा सूर्यमण्डल के मध्य में विराजमान गायत्री का ध्यान करें।

मध्याह्नध्यान- गायत्री का

सावित्री-युवती स्वरूपिणी, यजुर्वेद स्वरूपिणी, विष्णुरूपा, गुरुड़ासना, कृष्णवर्णा त्रिनेत्रा, चतुर्भुजा, शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारिणी सूर्यमण्डल के मध्य में विराजमान सावित्री का ध्यान करें।

सायाह्नध्यान- गायत्री का

सरस्वती रविमण्डल मध्यस्था, वृद्धा, सामवेद स्वरूपिणी, रुद्ररूपा, वृषभासना, शुक्लवर्णा, चतुर्भुजा, त्रिनेत्रा, ड़मरू, पाश, पात्रधारिणी सूर्यमण्डल के मध्य में विराजमान, सरस्वती स्वरूपिणी गायत्री का ध्यान करें।

ब्रह्मदण्ड-

गायत्री का चतुर्थ पाद "परो रजसे सावदोम्" है अर्थात्-सच्चिदानन्द स्वरूप जलरूप से संसार का पालन करने वाले, अनन्त तेज के धाम, रसमय, अमृतमय और भूर्भुवः स्वः स्वरूप त्रिभुवनात्मक ब्रह्म हमारी रक्षा करें। यह चतुर्थ गायत्री का पाद "ब्रह्म दण्ड" कहलाता है जिसे सन्यासी महात्मा लोग ही करते हैं।

विश्वामित्र ने स्वयं इस ब्रह्मदण्ड निर्माण के लिए चतुष्पद गायत्री मन्त्र का प्रयोग बतलाया है।

किसी भी मंत्र का पुरश्चरण करना हो उसकी सिद्धि के लिए एक लाख, कम से कम दस हजार गायत्री का जप करना आवश्यक है। गायत्री के अनुलोम विलोम विधि से-रक्षास्त्र, ब्रह्मास्त्र-पाशुपतास्त्रादि तैयार किए जाते थे।

इसी मंत्र के प्रभाव से, दीर्घायु, आरोग्यता, मुक्ति, भौतिक रोग, दुराग्रह, अभिचार, भूत-प्रेत और पिशाचबाधा, दमारोग, क्षयरोग, प्रेमरोगद्व श्रीप्राप्ति, अपमृत्यु निरसन, त्रिविध ताप निवृत्ति इत्यादि प्रकार से शास्त्र प्रतिपादित विधि तथा बताई जप संख्या के अनुसार विविधकार्य सिद्ध किए जा सकते हैं-इसके लिए किसी विद्वान् गुरु से परामर्श लेना आवश्यक है।

गायत्री जप के बाद मनोऽनुकूल कार्यसिद्धि के लिए स्वच्छ सामग्री तथा उपयुक्त समिधाओं से दशांश, हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन करके ब्राह्मण को भोजन करवाना चाहिए।

गायत्री पूजा की संक्षिप्त विधि

1. सूर्य का ध्यान
2. आत्मपूजन
3. पृथ्वी, सूर्य, धूप-दीपक पूजन
4. अपना नाम गोत्र वारादि के द्वारा संकल्प
5. गायत्री ध्यान
6. आवाहन
7. स्नान के लिए आसन
8. पाद्य-पैर धोने के लिए जल
9. अर्घ्य, हाथों के लिए गन्ध पुष्पादि
10. आचमन के लिए जल
11. मधुपर्क (घी, शहद, दही)
12. स्नान
13. पञ्चामृत स्नान
14. जल से शुद्ध स्नान
15. सुगन्धित द्रव्य स्नान
16. शुद्ध जल स्नान
17. सिंहासन या कलश पर मूर्ति स्थापन
18. वस्त्र धारण
19. उपवस्त्र
20. यज्ञोपवीत
21. अलंकार-कंकण, मुकुटादि, कर्णभूषण, हार, बाजूबंद, अंगूठी, करघनी, नूपुर-पजेब, तिलक, कुंकुम, पुष्प, पुष्पमाला, सिन्दूर, कज्जल, सेन्ट (अतर), धूप, घृतज्योति, नैवेद्य के बाद, प्राण, अपान, समान उदान तथा व्यान वायु के लिए पांच बार जल छोड़ें फल, ताम्बूल, दक्षिणा, छत्र, चामर, शीशा, पंखा, आरती, पुष्पांञ्जलि, प्रदक्षिणा, गायत्रीजप, समर्पण, क्षमाप्रार्थना।

विशेष– गायत्री माता की पूजा करते समय - गायत्री मंत्र से ही ध्यान-आवाहनादि समर्पित करें या–

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै गायत्री देव्यै नमः

ध्यानं - समर्पयामि, आवाहनं - समर्पयामि आसनं समर्पयामि

इसी प्रकार- पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, पञ्चामृत स्नान आदि सभी पूजा-उपचार इसी मंत्र से समर्पित करें।

नोट– इसी प्रकार पवित्र होकर श्रद्धा सद्भाव से पूजा करके अपनी मनोऽभिलषित कामनाओं के लिए प्रार्थना करें।

॥ ध्यानम् ॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवलच्छायैर्मुखैस्तीक्षणै-
र्युक्तामिन्दु निबद्ध-रत्नमुकुटां तत्वार्थवर्णात्मिकां।
गायत्रीं वरदा-ऽभयांकुश-कशाः शूलं कपालं गुणं
शङ्खं-चक्रमथार-विन्द-युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥
ॐ भूर्भुवः स्वःगायत्री देव्यै नमः ध्यानं समर्पयामि।
गायत्री श्रुति जननी हि ब्रह्म विद्या
श्री साङ्ख्यायनसहगोत्रका त्रिसन्ध्या।
षट्कुक्षिः किल त्रिपदा च पंच मौलि
सम्भाव्या प्रतिवदनं जनैस्त्रिनेत्रा॥

अर्थात्-वेदमाता गायत्री ही ब्रह्म विद्या है। यह सांख्यापनगोत्र वाली त्रिसन्ध्या (प्रातर्मध्याह्न सायंकालीना) षट्कुक्षि-(शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष रूपा) पञ्चमौलि (अधिलोक, अधिज्योतिष, अधिविद्य, अधिप्रज्ञ, और अध्यात्म रूप वाली) प्रतिवदन त्रिनेत्रा (प्रतिमुख, ध्याता, ध्यान और ध्येय स्वरूपा) त्रिपदा-(ऋग्यजुः-साम तीन पदवाली) निश्चय रूप से सम्भाव्या (भावना किये जाने वाली है)।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

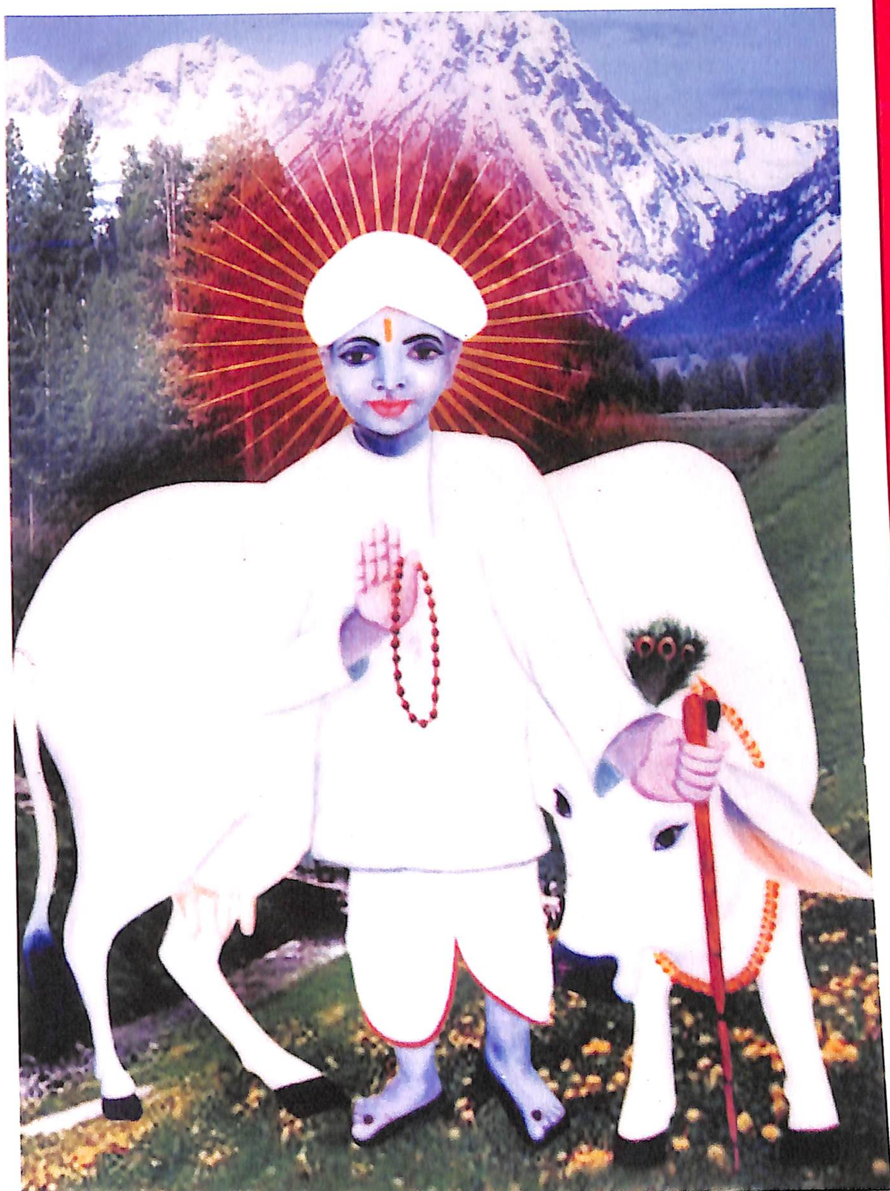
अर्थात्-

1. जो सविता देव का तेज हम सब के द्वारा प्रार्थनीय है, जप करने वालों के पापों का जो नाशकरता है, उस तेज की हम उपासना करते हैं, वह तेज हमारी बुद्धि को उत्तम कार्य करने में प्रेरित करे।
2. उस सूर्य देव का जो भर्गरूप तेज प्रार्थनीय है उसका हम ध्यान करते हैं वह हमारी बुद्धि को ब्रह्म रूप में प्रेरित करे। सन्मार्ग में प्रेरित करे।
3. उस प्राण स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें, वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

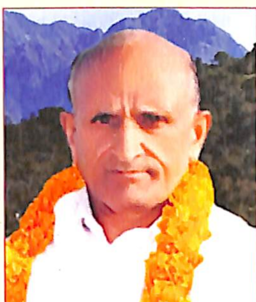
यह गायत्री मन्त्र अद्भुत शक्ति वाला है। आप सभी को इस मंत्र का जप राष्ट्र-की, अपनी, समाज की, देश की, अपने परिवार की उन्नति के लिए सभी दोषों को दूर करने के लिए तेज प्राप्ति के लिए विविध बाधाओं को दूर करने के लिए अर्थ की भावना करते हुए स्वच्छता का ध्यान रखते हुए (स्वच्छता में भगवान् का वास होता है)। मां भगवती गायत्री माता का प्रतिदिन जप अवश्य करें। गायत्री के परम उपासक ब्रह्मलीन योगीराज बावा बल्लो जी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए गायत्री जप अवश्य करें।

विशेष- बावा बल्लो जी के स्थान पर आशीर्वाद लेने के लिए जब तक आपका नम्बर नहीं आता तब तक पंङ्क्ति में बैठकर बावा बल्लो जी के स्मरण के साथ-साथ गायत्री मंत्र का जप करते रहें-आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। तथा आपकी सर्वत्र विजय होगी।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ



योगीराज परमतपस्वी बावा बल्लो जी



तपोनिष्ठ ब्रह्मलीन
पं. देवराज जी शर्मा



परमतपस्वी सम्माननीय
पं. यशपाल जी शर्मा



वसन्त पंचमी के पावन अवसर पर
बावा बल्लो जी की सेवा में
सादर समर्पित
विक्रमी सं० २०७३, सन् ई० २०१७





प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री
राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त
पूर्व प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय (कोट-भलवाल) जम्मू तवी

मूल्य - नित्य सन्ध्योपासना तथा गायत्री मन्त्र जप

D.V. Printers, Delhi - M: 09990279798